# श्रीमहिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्य-शिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२॥

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्ब वनप्रियवासिनि हासरते
शिखरशिरोमणि तुंगहिमालय शृंगनिजालयमध्यगते
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥३॥

अयि शतखण्ड-विखण्डितरुण्ड-वितुण्डितशुण्ड-गजाधिपते
रिपुगजगण्ड-विदारणचण्ड-पराक्रमशुण्ड-मृगाधिपते
निजभुजदण्ड-निपातितखण्ड-विपातितमुण्ड-भटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥४॥

अयि रणदुर्मद-शत्रुवधोदित-दुर्धर-निर्जर-शक्तिभृते
चतुरविचार-धुरीणमहाशिव-दूतकृतप्रमथाधिपते
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मति-दानवदूत-कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥५॥

अयि शरणागत-वैरिवधूवर-वीरवराभय-दायकरे
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोऽधिकृतामल-शूलकरे।
दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥६॥

अयि निजहुङ्कृति-मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
समरविशोषित-शोणितबीज-समुद्भवशोणित-बीजलते।
शिवशिवशुम्भ-निशुम्भमहाहव-तर्पितभूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥७॥

धनुरनुषंग-रणक्षणसंग-परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनकपिशंग-पृषत्कनिषंग-रसद्भटशृंग-हताबटुके।
कृतचतुरंग-बलक्षितिरंग-घटद्बहुरंग-रटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥८॥

जय जय जप्य जये जयशब्द-परस्तुतितत्पर-विश्वनुते
झणझणझिञ्झिमि-झिंकृतनूपुर-शिञ्जितमोहित-भूतपते।
नटितनटार्धनटीनटनायक-नाटितनाट्य-सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥९॥

अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनोहर-कान्तियुते
श्रितरजनी-रजनीरजनी-रजनीरजनीकर-वक्त्रवृते।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१०॥

महित-महाहववल्लभ-तल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लिकपल्लिक-मल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिकवर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल-समुल्लसितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥११॥

अविरल-गण्ड-गलन्-मदमेदुर-मत्तमतंगजराजपते
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधि-रूप-पयोनिधि-राजसुते।
अयि सुदतीजन-लालसमानस-मोहन-मन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१२॥

कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भाललते
सकल-विलास-कलानिलय-क्रम-केलिचलत्कल-हंसकुले।
अलिकुल-संकुल-कुन्तलमंडल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१३॥

करमुरलीरव-वीजित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलितमिलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते।
निजगणभूत-महाशबरीगण-रंगणसम्भृत-केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१४॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र-मयूखतिरस्कृत-चण्डरुचे
प्रणतसुराऽसुर-मौलिमणि-स्फुरदंशुल-सन्नख-चन्द्ररुचे।
जितकनकाचल-मौलिमदोर्जित-निर्भरकुञ्जर-कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१५॥

विजित-सहस्रकरैक-सहस्र-करैक-सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक-संगरतारक-संगरतारक-सूनुसुते।
सुरथ-समाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१६॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१७॥

कनकलसत्कलशीक-जलैरनुषिञ्चति ते रणरंग भुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ-तटीपरिरम्भ-सुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि मृडानि सदा मयि देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१८॥

तवविमलेन्दुकुलंवदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूत-पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥१९॥

अयिमयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्य कपर्दिनि शैलसुते॥२०॥